मधुबन ओम् शान्ति अंक 281 दिसम्बर 2015

पत्र–पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(12-11-15)

प्राणेश्वर दीपराज बाप की सभी जगमगाती हुई दीपरानियां, एक बाबा के लव में लवलीन रहने वाले सभी जगे हुए चैतन्य दीपक निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ, दीपावली, नया वर्ष और भैया दूज की आप सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां, शुभ कामनायें।

मधुबन में तो यह त्योहार सभी कितना उमंग-उत्साह के साथ मनाते, तीनों ही स्थान खूब रंग बिरंगी लाइट से सज जाते हैं, आप सब दूर बैठे यह सुन्दर नज़ारे देख-देख हर्षित होते रहते होंगे। कितना मीठा बाबा अपने स्नेह की गोदी में बिठाए, प्यार से वाह बच्चे वाह के गीत गाते उड़ती कला में उड़ाता रहता है। चारों ओर से जो भी बाबा के बच्चे मधुबन घर में आते हैं, थोड़े समय के अव्यक्त मिलन से भी कितना भरपूर हो, खुशियों का खजाना लेकर जाते हैं। वह तो आप सब अनुभवी हो ही। समय अनुसार दिल साफ है तो सब मुरादें हांसिल हो जाती हैं। अब तो बाबा कहते बच्चे साधारणता को छोड़ सदा श्रेष्ठ संकल्प, शुभ भावना के संकल्पों द्वारा सहजयोगी बनो। दिल साफ, सच्ची और रहम वाली हो। दिल साफ है तो हल्की है, इससे आत्म-अभिमानी स्थिति बहुत अच्छी रहती है, सिर्फ न्यारेपन की कमी जरा भी नहीं होनी चाहिए। मीठे दिलवाला बाप ने हमारे दिल को ऐसी सच्ची-सच्ची बातें सुना करके, स्नेह की दृष्टि देकरके साफ स्वच्छ बनाया है। फिर हम भेंट करते हैं हमारी दृष्टि कैसी है? आप सभी भी एक मिनट के लिए मन की शान्ति से, दिल की सच्चाई से स्वयं को देखो – मेरी दिल सच्ची साफ है? हमारी दृष्टि और वृत्ति कैसी है? प्रैक्टिकल लाइफ में सदा उमंग-उत्साह रहता है? मन शान्त और कर्मेन्द्रियां आर्डर में हैं? जीवन से ज्ञानी तू आत्मा के लक्षण नेचुरल दिखाई देते हैं? ऐसी सूक्ष्म चेकिंग करते हुए अब कदम कदम में पदमों की कमाई जमा करनी है।

मैंने देखा है जो प्यार से सेवा करते हैं वह सदा उमंग-उल्हास में रहते हैं और औरों को भी उमंग उल्हास में अपना साथी बना देते हैं। हमारे उमंग को देख साथी भी सहज अपना सहयोग देते हैं। किसी से कुछ भी मांगने वा कहने की जरूरत नहीं पड़ती है।

बोलो, हमारी मीठी मीठी बहिनें, भाई सदा उमंग-उत्साह से सेवायें कर रहे हो ना! सच्ची दिल से साहेब को राज़ी किया है ना! मेरा तो सदा लक्ष्य रहता है कि लाइफ में कभी भी निराशा न आये। सदा चलन और चेहरे से उमंग-उत्साह दिखाई दे तो सेवा में अपने आप वृद्धि होती है। किसी से भी रीस (ईर्ष्या) नहीं करनी है। सबकी अपनी-अपनी सेवा, अपना-अपना पुरुषार्थ है। तो रीस न करके रेस करना माना अच्छा उमंग-उल्हास में रहना और औरों को भी लाना। ऐसी मीठी-मीठी रूहरिहान इस बार डबल विदेशी भाई बहिनों के साथ होती रही। पीस आफ माइन्ड के प्रोग्राम में भी बहुत अच्छे गेस्ट कई देशों से आये थे।

बाकी दिल्ली की बेहद सेवाओं के समाचार तो आप सब लाइव देखते सुनते रहते हो। करनकरावनहार बाबा सब कुछ आपेही करता कराता है। सब तरफ सेवाओं की अच्छी धूम है। सभी अथक बन बाबा को प्रत्यक्ष करने में लगे हुए हैं। मैं तो चारों ओर की सेवाओं के समाचार सुन-सुनकर मीठे बाबा का शुक्रिया मानते आप सबको बहुत-बहुत दिल से प्यार करती हूँ। सभी मुख खोलो, खाओ टोली, सुनो बोली फिर बनो होली। अच्छा -

सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

तपस्या वर्ष (दिसम्बर 2015) के लिए विशेष होम वर्क

A) अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

1) जैसे जोर-शोर की सेवा द्वारा सम्पूर्ण समाप्ति के समय को समीप ला रहे हो, ऐसे अब स्वयं को सम्पन्न बनाने का भी प्लैन बनाओ। अब धुन लगाओ कि कुछ भी हो जाए कर्मातीत बनना ही है। इसकी डेट अब फिक्स करो।

2) कर्मातीत का अर्थ यह नहीं है कि कर्म से अतीत हो जाओ। कर्म से न्यारे नहीं, कर्म के बन्धन में फँसने से न्यारे - इसको कहते हैं कर्मातीत। कर्मयोग की स्थिति कर्मातीत स्थिति का अनुभव कराती है। यह कर्मयोगी स्थिति अति प्यारी और न्यारी स्थिति है, इससे कोई कितना भी बड़ा कार्य, मेहनत का हो लेकिन ऐसे लगेगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं।

3) कर्मातीत का अर्थ ही है - सर्व प्रकार के हद के स्वभाव-संस्कार से अतीत अर्थात् न्यारा। हद है बन्धन, बेहद है निर्बन्धन। ब्रह्मा बाप समान अब हद के मेरे-मेरे से मुक्त होने का अर्थात् कर्मातीत होने का अव्यक्ति दिवस मनाओ। इसी को ही स्नेह का सबूत कहा जाता है।

4) कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करने के लिए सदा साक्षी बन कार्य करो। साक्षी अर्थात् सदा न्यारी और प्यारी स्थिति में रह कर्म करने वाली अलौकिक आत्मा हूँ, अलौकिक अनुभूति करने वाली, अलौकिक जीवन, श्रेष्ठ जीवन वाली आत्मा हूँ - यह नशा रहे। कर्म करते यही अभ्यास बढ़ाते रहो तो कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर लेंगे।

5) कर्मातीत बनने के लिए अशरीरी बनने का अभ्यास बढ़ाओ। शरीर का बंधन, कर्म का बंधन, व्यक्तियों का बंधन, वैभवों का बंधन, स्वभाव-संस्कारों का बंधन...कोई भी बंधन अपने तरफ आकर्षित न करे। यह बंधन ही आत्मा को टाइट कर देता है। इसके लिए सदा निर्लिप्त अर्थात् न्यारे और अति प्यारे बनने का अभ्यास करो।

6) कर्मातीत बनने के लिए कर्मों के हिसाब-किताब से मुक्त बनो। सेवा में भी सेवा के बंधन में बंधने वाले सेवाधारी नहीं। बन्धनमुक्त बन सेवा करो अर्थात् हद की रॉयल इच्छाओं से मुक्त बनो। जैसे देह का बन्धन, देह के सम्बन्ध का बन्धन, ऐसे सेवा में स्वार्थ - यह भी बन्धन कर्मातीत बनने में विघ्न डालता है। कर्मातीत बनना अर्थात् इस रॉयल हिसाब-किताब से भी मुक्त।

7) बहुतकाल अचल-अडोल, निर्विघ्न, निर्बन्धन, निर्विकल्प, निर-विकर्म अर्थात् निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी - स्थिति में रहो तब कर्मातीत बन सकेंगे।

8) कर्मातीत स्थिति का अनुभव करने के लिए ज्ञान सुनने सुनाने के साथ अब ब्रह्मा बाप समान न्यारे अशरीरी बनने के अभ्यास पर विशेष अटेन्शन दो। जैसे ब्रह्मा बाप ने साकार जीवन में कर्मातीत होने के पहले न्यारे और प्यारे रहने के अभ्यास का प्रत्यक्ष अनुभव कराया। सेवा को वा कोई कर्म को छोड़ा नहीं लेकिन न्यारे हो लास्ट दिन भी बच्चों की सेवा समाप्त की, ऐसे फालो फादर करो।

9) सेवा का विस्तार भल कितना भी बढ़ाओ लेकिन विस्तार में जाते सार की स्थिति का अभ्यास कम न हो, विस्तार में सार भूल न जाये। खाओ-पियो, सेवा करो लेकिन न्यारेपन को नहीं भूलो।

10) कर्मातीत अर्थात् कर्म के किसी भी बंधन के स्पर्श से न्यारे। ऐसा ही अनुभव बढ़ता रहे। कोई भी कार्य स्पर्श न करे और करने के बाद जो रिजल्ट निकलती है उसका भी स्पर्श न हो, बिल्कुल ही न्यारापन अनुभव होता रहे। जैसेकि दूसरे कोई ने कराया और मैंने किया। निमित्त बनने में भी न्यारापन अनुभव हो। जो कुछ बीता, फुलस्टाप लगाकर न्यारे बन जाओ।

11) कर्म करते तन का भी हल्कापन, मन की स्थिति में भी हल्कापन। कर्म की रिजल्ट मन को खींच न ले। जितना ही कार्य बढ़ता जाये उतना ही हल्कापन भी बढ़ता जाये। कर्म अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे लेकिन मालिक होकर कर्म कराने वाला करा रहा है और करने वाले निमित्त बनकर कर रहे हैं - यह अभ्यास बढ़ाओ तो सम्पन्न कर्मातीत सहज ही बन जायेंगे।

12) कर्मातीत बनने के लिए चेक करो कहाँ तक कर्मों के बन्धन से न्यारे बने हैं? लौकिक और अलौकिक, कर्म और सम्बन्ध दोनों में स्वार्थ भाव से मुक्त कहाँ तक बने हैं?

13) जब कर्मों के हिसाब-किताब वा किसी भी व्यर्थ स्वभाव-संस्कार के वश होने से मुक्त बनेंगे तब कर्मातीत स्थिति को प्राप्त कर सकेंगे। कोई भी सेवा, संगठन, प्रकृति की परिस्थिति स्वस्थिति वा श्रेष्ठ स्थिति को डगमग न करे। इस बंधन से भी

मुक्त रहना ही कर्मातीत स्थिति की समीपता है। देती है? इस बन्धन से भी मुक्त हैं?

14) पुरानी दुनिया में पुराने अन्तिम शरीर में किसी भी प्रकार की व्याधि अपनी श्रेष्ठ स्थिति को हलचल में न लाये। स्वचिन्तन, ज्ञान-चिन्तन, शुभचिन्तक बनने का चिन्तन ही चले तब कहेंगे कर्मातीत स्थिति।

15) कर्मातीत अर्थात् कर्म के वश होने वाला नहीं लेकिन मालिक बन, अथॉरिटी बन कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध में आये, विनाशी कामना से न्यारा हो कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराये। आत्मा मालिक को कर्म अपने अधीन न करे लेकिन अधिकारी बन कर्म कराता रहे। कराने वाला बन कर्म कराना - इसको कहेंगे कर्म के सम्बन्ध में आना। कर्मातीत आत्मा सम्बन्ध में आती है, बन्धन में नहीं।

16) पिछले कर्मों के हिसाब-किताब के फलस्वरूप तन का रोग हो, मन के संस्कार अन्य आत्माओं के संस्कारों से टक्कर भी खाते हों लेकिन कर्मातीत, कर्मभोग के वश न होकर मालिक बन चुक्तू कराओ। कर्मयोगी बन कर्मभोग चुक्तू करना - यह है कर्मातीत बनने की निशानी।

B) कर्मयोगी के साथ कर्मातीत स्थिति का अनुभव करो

1) किसी भी प्रकार का देह का, सम्बन्ध का, वैभवों का बन्धन अपनी ओर आकर्षित न करे, ऐसे स्वतन्त्र बनो इसको ही कहा जाता है – बाप समान कर्मातीत स्थिति। प्रैक्टिस करो अभी-अभी कर्मयोगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज।

2) जैसे आपकी रचना कछुआ सेकेण्ड में सब अंग समेट लेता है। समेटने की शक्ति रचना में भी है। आप मास्टर रचता समेटने की शक्ति के आधार से सेकेण्ड में सर्व संकल्पों को समाकर एक संकल्प में सेकेण्ड में स्थित हो जाओ। जब सर्व कर्मेन्द्रियों के कर्म की स्मृति से परे एक ही आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जायेंगे तब कर्मातीत अवस्था का अनुभव होगा।

3) जैसे देखना, सुनना, सुनाना – ये विशेष कर्म सहज अभ्यास में आ गया है, ऐसे ही कर्मातीत बनने की स्टेज अर्थात् कर्म को समेटने की शक्ति से अकर्मी अर्थात् कर्मातीत बन जाओ। एक है कर्म-अधीन स्टेज, दूसरी है कर्मातीत अर्थात् कर्म-अधिकारी स्टेज। तो चेक करो मुझ कर्मेन्द्रिय-जीत स्वराज्यधारी राजाओं की राज्य कारोबार ठीक चल रही है?

4) हर ब्राह्मण बाप समान चैतन्य चित्र बनो, लाइट और माइट हाउस की झाँकी बनो। संकल्प शक्ति का, साइलेन्स का भाषण तैयार करो और कर्मातीत स्टेज पर वरदानी मूर्त का पार्ट बजाओ तब सम्पूर्णता समीप आयेगी। फिर सेकेण्ड से भी जल्दी जहाँ कर्तव्य कराना होगा वहाँ वायरलेस द्वारा डायरेक्शन दे सकेंगे। सेकेण्ड में कर्मातीत स्टेज के आधार से संकल्प किया और जहाँ चाहें वहाँ वह संकल्प पहुंच जाए।

5) महारथियों का पुरुषार्थ अभी विशेष इसी अभ्यास का है। अभी-अभी कर्म योगी, अभी-अभी कर्मातीत स्टेज। एक स्थान पर खड़े होते भी चारों ओर संकल्प की सिद्धि द्वारा सेवा में सहयोगी बन जाओ।

6) जैसे साकार में आने जाने की सहज प्रैक्टिस हो गई है वैसे आत्मा को अपनी कर्मातीत अवस्था में रहने की भी प्रैक्टिस हो। अभी-अभी कर्मयोगी बन कर्म में आना, कर्म समाप्त हुआ फिर कर्मातीत अवस्था में रहना, इसका अनुभव सहज होता जाए। सदा लक्ष्य रहे कि कर्मातीत अवस्था में रहना है, निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने फिर कर्मातीत।

7) जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए। कर्म भी करो और याद में भी रहो। जो सदा कर्मयोगी की स्टेज पर रहते हैं वह सहज ही कर्मातीत हो सकते हैं। जब चाहे कर्म में आयें और जब चाहें न्यारे बन जायें।

8) जैसे साकार में देखा लास्ट कर्मातीत स्टेज का पार्ट सिर्फ ब्लैसिंग देने का रहा, बैलेन्स की भी विशेषता और ब्लैसिंग की भी कमाल रही। ऐसे फालो फादर। सहज और शक्तिशाली सेवा यही है। अब विशेष आत्माओं का पार्ट है ब्लैसिंग देने का। चाहे नयनों से दो, चाहे मस्तकमणी द्वारा।

9) जैसे बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज निकलती है-''मेरा बाबा''। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो। हरेक से मेरे-पन की भासना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक सहयोगी सेवा के साथी हैं, इसको कहा जाता है - बाप सामान। इसको ही कहा जाता है कर्मातीत स्टेज के तख्तनशीन।

10) अब सेवा के कर्म के भी बन्धन में नहीं आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है, इस कर्मबन्धन से कर्मातीत। तो कर्मातीत बनना है और ''यह वही हैं, यही सब कुछ हैं,'' यह महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप ठिकाने पर लाना है।

11) अपनी हर कर्मेन्द्रिय की शक्ति को इशारा करो तो इशारे

से ही जैसे चाहो वैसे चला सको। ऐसे कर्मेन्द्रिय जीत बनो तब फिर प्रकृतिजीत बन कर्मातीत स्थिति के आसनधारी सो विश्व राज्य अधिकारी बनेंगे। हर कर्मेन्द्रिय ''जी हजूर'' ''जी हाज़िर'' करती हुई चले। आप राज्य अधिकारियों का सदा स्वागत अर्थात् सलाम करती रहे तब कर्मातीत बन सकेंगे।

12) जब कर्मातीत स्थिति के समीप पहुंचेंगे तब किसी भी आत्मा तरफ बुद्धि का झुकाव, कर्म का बंधन नहीं बनायेगा। आत्मा का आत्मा से लेन-देन का हिसाब भी नहीं बनेगा। वे कर्म के बन्धनों का भी त्याग कर देंगी।

13) अन्त:वाहक स्थिति अर्थात् कर्मबन्धन मुक्त कर्मातीत स्थिति का वाहन अर्थात् अन्तिम वाहन, जिस द्वारा ही सेकण्ड में साथ में उड़ेंगे। इसके लिए सर्व हदों से पार बेहद स्वरूप में, बेहद के सेवाधारी, सर्व हदों के ऊपर विजय प्राप्त करने वाले विजयी रत्न बनो तब ही अन्तिम कर्मातीत स्वरूप के अनुभवी स्वरूप बनेंगे।

14) आवाज से परे अपनी श्रेष्ठ स्थिति में स्थित हो जाओ तो सर्व व्यक्त आकर्षण से परे शक्तिशाली न्यारी और प्यारी स्थिति बन जायेगी। एक सेकण्ड भी इस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित होंगे तो इसका प्रभाव सारा दिन कर्म करते हुए भी स्वयं में विशेष शान्ति की शक्ति अनुभव करेंगे। इसी स्थिति को कर्मातीत स्थिति, बाप समान सम्पूर्ण स्थिति कहा जाता है।

15) कर्मातीत स्थिति को पाने के लिए विशेष स्वयं में समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति धारण करना आवश्यक है। कर्मबन्धनी आत्माएं जहाँ हैं वहाँ ही कार्य कर सकती हैं और कर्मातीत आत्मायें एक ही समय पर चारों ओर अपना सेवा का पार्ट बजा सकती हैं क्योंकि कर्मातीत हैं। उनकी स्पीड बहुत तीव्र होती है, सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकती है, तो इस अनुभूति को बढ़ाओ।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 28-4-13 *मधुबन*

"अपने बोझ बाबा को देकर लाइट बनो, हर काम लाइट होकर करो तो बाबा की मदद मिलती रहेगी"

(दादी जानकी)

आज की सभा को देख एक गीत याद आता है – रचना जिसकी इतनी सुन्दर, वह रचयिता कैसा होगा! रचना को देख रचता याद आ जाता है। हर एक को अनुभव है ख्वाब ख्यालों में भी नहीं होगा हम भगवान का बच्चा बनके नाचेंगे। समझा था कृष्ण के साथ गोप-गोपियाँ डांस करती हैं पर स्वयं परमात्मा बाप के साथ डांस कर रहे हैं। सेवा है - डांस। डांस कौन करता है? डांस में क्या करते हैं? हाथ पाँव ऐसे ऐसे करते हैं। चलते-फिरते, हंसते-गाते कई आत्माओं को प्रेरणा देने वाले बनो। बाबा तेरा बनने में सुख मिलता है इलाही है ...। अब बाबा कहता है सारी विश्व का मालिक बनने वाले हो तो सारी विश्व को खुश करना है, ज्ञान में हो या न हो।

बाबा सत्य है, नॉलेज सत्य है तो मुझे क्या बनना है? सत् चित्त आनंद स्वरूप। फिर क्या करने का है? कराने वाला करा रहा है, मुझे सिर्फ हाज़िर होना है। जितना करते हैं उतना अच्छा रहता है, यह अच्छी हॉबी हो जाती है। जो भी बोझा है वो मेरे को दे दो, यह बाबा ऑफर करता है तो बोझ बाबा को दे करके हल्के हो जाओ, लाइट बनो और लाइट से काम लो। लाइट माना हल्के भी बनते हैं फिर लाइट से काम भी लाइट होता है। जो ज्ञान मिलता है वह लाइट काम करती है। माइट बाबा देता है, एवरीथिंग राइट हो जाता है, इज़ी है ना। शिवबाबा जैसा कोई नहीं, ब्रह्माबाबा जैसा कोई नहीं, हम बच्चों जैसा भी कोई नहीं है। ऐसे इतने बड़े संगठन में समय को सफल करना, स्नेह, सहयोग, सहानुभूति देना। जितना करो उतना कराने वाला हमारे में हक लगाके कराता है। ऐसे हम एक दो के गुण उठायें, किसी के भी अवगुण को कभी भी चित्त पर न रखें। किसी का अवगुण चित्त पर रखना, इसकी सजा यह है कि ज्ञान धारण नहीं होगा, अमृतवेले नींद आयेगी, क्लास में लेट आयेंगे, तो यह भोगना है। तो सारा समय संकल्प उस भोगने में ही खत्म होंगे तो निरंतर योगी कब बनेंगे? बाबा तो चाहता है, मेरा बच्चा निरंतर योगी रहे।

जिसकी बुद्धि में रहता है कि योग से बहुत फायदे हैं तो उसकी बुद्धि कभी भी इधर-उधर नहीं जाती है, न कहाँ चलायमान होंगे, न कोई परिस्थिति में डोलायमान होंगे। तो स्थिर बुद्धि से, एकाग्रता की शक्ति से अडोल-अचल स्थिति

बनाना माना अकालतख्त पर बैठना। मनुष्यों को मौत का डर है हमको मौत का डर नहीं है क्योंकि पता है मौत अच्छा ही होगा इसलिए कोई डर नहीं है। ऐसे कर्म बाबा ने सिखलाये हैं और पुराने विकर्म विनाश कर लिये हैं तो कोई भय नहीं है। तो ऐसे सतयुगी दुनिया को सामने रख ऐसी स्थिति बनानी है जो नेचुरल सतयुग में होगा। अच्छा।

दूसरा क्लास-

"विचार सागर मंथन करो तो राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी, इससे स्व सेवा और सर्व की सेवा होगी" (दादी जानकी)

विचार सागर मंथन करना मुझे तो बहुत अच्छा लगता है, इससे बहुत फायदा है सबसे बड़ा फायदा तो कोई और विचारों में लटकेंगे, अटकेंगे नहीं। सागर को मंथन करने से मोती मिलते हैं। ऊपर-ऊपर से करेंगे तो सिर्फ कौड़ियाँ ही मिलती हैं, वह भी सच्ची होती हैं। पैसा झूठा हो सकता है, नोट दूसरा हो सकता है लेकिन कौड़ी झूठी नहीं हो सकती है। शंख जो होता है वो सागर की रचना है इसलिए उसका आवाज कितना दूर दूर तक गूँजता है। विचार सागर मंथन से लगेगा यह सागर की रचना है। कोई और बात का विचार न अपने लिये आता है, न किसी के लिए आता है। शान्त रहने से कुछ अच्छा माल मिलता है, वायब्रेशन मिल जाते हैं। सोचने में नहीं मिलता है इसलिए मैं अपने को इन सबसे फ्री रखती हूँ। मेरी दिल होती है आप भी ऐसे बार-बार मीटिंग फीटिंग नहीं करो, क्या जरुरत है! फ्री रहो। हाँ, फैमिली फीलिंग की मीटिंग जरुरी है क्योंकि परिवार प्यारा लगता है।

विचार सागर मंथन करके प्रैक्टिकल जीवन के परिवर्तन से नवीनता का अनुभव करो। मेरे में नवीनता आयेगी तो औरों को प्रेरणा मिलेगी। यह गुप्त बात है, अगर हम अभी करेंगे ना, भले पहले इतना पुरुषार्थ नहीं किया है, बाबा रहमदिल है, फ्राखदिल है उसका फायदा लो। विचार सागर मंथन जल्दी-जल्दी में नहीं होता है, विचार सागर मंथन करने से राइट टाइम पर राइट टचिंग आयेगी, यह भी भाग्य है। इससे स्व सेवा और सर्व की सेवा होगी। अगर जरा भी मैं दु:ख महसूस करने वाली आत्मा हूँ, तो मैं दूसरे का दु:ख दूर नहीं कर सकती हूँ। लाइट रहने से औरों को लाइट अनुभव होगी, हल्कापन लगेगा। 5 हो या 50 हो या 500 हो, पर बाबा की लाइट लाखों करोड़ों को मिल रही है।

कोई बीमारी है तो आश्चर्य नहीं खाना है, यह क्यों? यह हिसाब-किताब सतयुग में नहीं होगा, दवाई है इसलिए क्यों न कहो। आयी है पास हो जायेगी, अगर बीमारी को सोचते हैं तो बैठ जाती है, जाती नहीं है। कई हैं कई डॉक्टर और दवाइयाँ बदलते रहते हैं, बहुत खर्चा करने के बाद भी कुछ नहीं होता है, पर कोई हैं जो बीमारी को खुद ही भगा लेते हैं। बाबा को सर्जन के रूप में देखो, वो जाने उसका काम जाने, वह इंजेक्शन लगा करके अशरीरी बना देता है।

बाबा कहता है कोई बोझ हो, कोई संकल्प हो तो तुम सिर्फ मुझे दे दो, ताकि तुम साफ रहो। साफ रहेंगे तो सेफ रहेंगे। माया छुयेगी भी नहीं, पर कर्मभोग, थोड़ा ब्लड प्रेशर हाई हुआ, ... परेशान हो जायेंगे। अरे, परेशान क्यों होते हो? प्रेशर परेशान होने से होता है। शान में रहने से नहीं होता है, यह नवीनता लाओ ना, क्या बड़ी बात है। तो ऐसे एक दो से सीखने की भावना हो, तो कभी भी हमको तकलीफ नहीं होगी। न मेरे से किसी को तकलीफ हो, न मेरे को तकलीफ हो। किसी को शान्ति प्रेम भले मिले, जितना मिले पर थोड़ा भी कोई मेरा एक शब्द या मेरा रहन-सहन किसी को तकलीफ न दे। यह पुण्य के खाते में जमा होगा। कर्मों का हिसाब-किताब चुक्तू हो जायेगा।

तो बाबा यह विधि सिखाता है, महिमा करके योग्य बनाना। बाबा के काम का योग्य बनाना, मैं इस काम के लिए हूँ क्या? अरे, क्या भाषा बोली? सम्भलके बोलो क्योंकि संगमयुग पर एक एक बोल अमूल्य है। जैसे बाबा का एक एक बोल अनमोल है ऐसे हमारी भी बहुत वैल्यू है। जो पुरुषार्थ करना है, अब करना है मुझे करना है, समय करा रहा है, बाबा करा रहा है। कोई बड़ी बात नहीं है। गुप्त पास विथ ऑनर में आना है। क्या समझा है? कोई समझे ना समझे लेकिन बाबा तो समझता है ना। अगर हम खज़ानों को सम्भालके नहीं रखते हैं तो उसे प्राप्ति का कदर नहीं होता है।

जहाँ किचड़ा होता है वहाँ कीड़े पैदा हो जाते हैं। ऐसे ही

थोड़ा भी हमारे अन्दर किचड़ा होगा तो औरों को बीमारी पैदा करेगा इसलिए स्थूल, सूक्ष्म अन्दर बाहर से सफाई रखो क्योंकि मैं कोई डस्टबीन नहीं हूँ। कोई भी किचड़ा है मन का या तन का, तो वो इधर उधर नहीं फेंको क्योंकि यह भी ईश्वरीय कायदे हैं ना। ईश्वरीय कायदे प्रमाण चलो तो सब ठीक है। आजकल दुनिया में लव का दिवाला है न लव देना जानते हैं न लव लेना जानते हैं वह कायदेपर क्या चलेंगे? लवफुल ही लॉफुल होते हैं। मैं शरीर छोडूं तो क्या याद करेंगे थी तो अच्छी परन्तु... यह नहीं चाहिए वो यादगार नहीं है। तो दातापन के संस्कार इमर्ज करके ब्राह्मणों को स्नेह और सम्मान से प्यार दो और अपने से आगे रखो। इसमें थोड़ी भी बॉडी-कॉन्सेस की नेचर खतरा है इसलिए छोड़ो तो छूटेंगे। कोई बात पकड़के रखेंगे या मैं किसी की बात पकड़के रहेंगी तो मैं फंसी रहेंगी तो नुकसान किसको? कोई भी बात अगर पकड़के रखी तो कर्मबन्धन बढ़ गया। बाबा कहता है तुम्हारा चुक्तू करने आया हूँ, मेरी याद में रहो तो जो भी कुछ गलत है वो अभी प्रेजेन्ट सब माफ कर दूँगा, पुराने नाश भी कर दूँगा। अधर्म का नाश और सतयुग की स्थापना का दोनों काम इकट्ठा कर रहा है, इसलिए ऐसे बाबा को सदा प्यार से याद करना यानि जैसे सगाई होती है बस सम्बन्ध जुट जाता है। जब तक सगाई नहीं होती है तब तक एक दूसरे को देखते रहते, पर हमारी तो सगाई और शादी साथ-साथ हो गई। जिस दिन सगाई हुई, पसंद आया ना कर लो शादी। बाबा कहता है अगर शादी की है तो औरों को जन्म देते जाओ अच्छी तरह से अर्थात् आप समान बनाओ।

डबल विदेशी भाई बहिनों के प्रश्न - दादी जानकी जी के उत्तर

प्रश्नः- आज की दुनिया में हम सब तो बाबा के बच्चे हैं, हम भाग्यशाली हैं जो बाबा का ज्ञान हमें मिला हुआ है कोई भी बातें सामने आती है तो, अगर बाबा की नॉलेज मुझे न मिली होती तो मेरा जीवन कैसा होता, मैं समझ नहीं सकता हूँ। कई बारी हमारे सामने ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं तो हमारे से कुछ हो जाता है फिर बाद में रियलाइजेशन होता है कि ऐसा करना चाहिए था, ऐसा करते तो अच्छा था, तो हमारे में ऐसी समझ कैसे आये जो हम समझ सकते हैं कि सही समय पर क्या सही करने का है?

उत्तरः- पुरुषार्थ ऐसा है, जो कोई संरकमस्टांश हैं तो कोई बात नहीं है, बाबा बैठा है, यह अन्दर में विश्वास हो, निश्चय रहे। सोचने से बात बड़ी हो जाती है। बाबा बैठा है... इसलिए चिंता करने की बात नहीं है। हमने 50 साल से सर्विस के अनुभव में देखा है, कई जगह पर अर्थक्वेक आया होगा, कोई आपदा आयी होगी, पर हमारे पास बाबा के बच्चे सेफ रहे हैं। कुछ भी हुआ है फिर भी कोई बच्चे को कुछ भी नहीं हुआ है क्योंकि ऐसों की सम्भाल करने के लिए बाबा कोई-न-कोई विधि अपनाता है और वो फिर सारी लाइफ काम आती है। यह बहुतकाल भगवान के साथ का अनुभव है इसलिए कभी भी कुछ भी होता है तो कभी यह नहीं कहो कि मैं क्या करूँ? बाबा को याद करते रहो तो कोई-न-कोई युक्ति वा समझ बाबा वक्त पर दे देता है। तो बाबा की याद में अच्छी तरह से लाइफ को सफल करो।

प्रश्नः- बाबा हमें बताते हैं कि हमें निश्चय होना चाहिए बाबा में, ड्रामा में और खुद में। अब हमारा ड्रामा में और बाबा में तो पूरा विश्वास है लेकिन खुद में थोड़ा कम है तो उस विश्वास को कैसे बढ़ायें? खास करके जब हमारे सामने इतनी सारी बातें आती हैं।

उत्तरः- विश्वास बढ़ता तभी है जो कोई भी बात के विस्तार में नहीं जाते हैं। क्या करूँ वा कैसे करूँ... सोचा ना तो बात के विस्तार में चले गये। ड्रामा अनुसार परीक्षा आयी है, बाबा बैठा है, वन्डरफुल है ठीक हो जाता है। फिर ऑटोमेटिक अच्छी बातें जो हैं वो हमारे से होंगी यह विश्वास है। बाबा ने कराया मैंने किया। मैं कैसे करूँ... माना बाबा में निश्चय नहीं है। ड्रामा की नॉलेज इतनी गहरी है, बाबा सारा दिन स्मृति दिलाता है, यह मेरा बच्चा कल्प पहले वाला है, मुझे तो यह नशा है। बाबा कहता है मेरा हो कल्प पहले वाला हो। बाबा ने कहा मेरा बच्चा, तो मुझे फीलिंग आयी। बाबा ने कहा स्वदर्शन चक्र फिराओ, स्वदर्शन चक्र नहीं फिराते हो तो अपने में विश्वास नहीं होता है। और मेरे को अपने में विश्वास है, ड्रामा की नॉलेज अच्छा चला रही है, बाबा मेरा बाप टीचर सतगुरू है। मेरा बाप धर्मराज भी है, यह याद रखने से मन-वाणी-कर्म पर अटेन्शन रहता है वह श्रेष्ठ है तो संकल्प, समय भी सफल। एक घड़ी भी निष्फल नहीं जायेगी।

प्रश्नः- कई यूथ चाहे योग में, चाहे कर्मणा वा दिनचर्या में जब डिसीप्लीन में नहीं चलते हैं तो लगता है कि वे अपने आपको ही धोखा दे रहे हैं, तो डिसीप्लीन के साथ हम कैसे फ्रैण्डशिप बनाये रखें या उसको अपना फ्रैण्ड कैसे बनायें?

उत्तरः- सबसे पहले तो डिसीप्लेन के महत्व को समझना है। जैसे क्लास में टाइम पर आना, अमृतवेला करना, शाम का योग करना कुछ भी हो। अलबेलाई, आलस्य और बहाना यह तीन बातें नहीं चाहिए। कोई भी कुछ भी बोले, बाप की पालना, पढ़ाई का कदर हो। जो बाबा से मिला है उसका कदर हो तो ऑटोमेटिक वो जो कदर है ना, वह हमको डिसीप्लेन पर चलाता है। थोड़ी भी अलबेलाई भूलें कराती है, कराची में एक बारी मम्मा को एक मिनट लेट हुआ। बाबा क्लास में चला

गया तो मम्मा वहीं सीढ़ियों पर बैठ गयी, तो हमने कहा कि मम्मा ऊपर क्लास में चलो ना, तो मम्मा ने कहा मैं लायक नहीं हूँ। बाबा क्लास में पहुंच गया है अभी मैं कैसे जाऊं। तो यह ऐसी डिसीप्लेन हो। डिसीप्लेन पर चलने में (आलस्य, अलबेलापन, बहाना) तीन बातें बड़ी धोखा देने वाली हैं। मैं कभी बहाना नहीं दे सकती हूँ, जो टाइम पर करने की वैल्यु है, पता है ना यानि इसमें भी मार्क्स मिलते हैं। तो कोई भी काम टाइम पर करें यह भी डिसीप्लेन है।

07-7-15

"बाबा की आश है कि मेरा एक-एक बच्चा बाप समान बनके निर्विघ्न बनें"

(गुल्जार दादी)

अभी सभी बाबा की याद में बाबा की बातें सुनने के लिए इकट्ठे हुए हैं। अभी सबके सूरत में बापदादा की याद दिखाई दे रही है और हरेक को कितनी खुशी है क्योंकि बाबा कहता है कि खुशी जैसी खुराक और है ही नहीं। अगर खुराक खाना है तो खुशी, तो आप सब तो सदा खुश रहते ही हैं। तो आप तो खुराक खाते ही रहते हैं। आज देखो, बाबा की मुरली का ही वर्णन कर रहे हैं। आज बाबा ने कितनी अच्छी समझानी दी है, बाबा कहते हैं कि आप बच्चे जब यहाँ हॉल में बैठते हो तो उस समय आपके बुद्धि में क्या आता है? अभी बाबा आया कि आया, बाबा के महावाक्य सुनने के लिए आये हैं। तो सबकी बुद्धि में बाबा के शब्द ही स्मृति में आते रहते हैं और इस स्मृति में रहने से कितना सुख और शान्ति का अनुभव होता है। सिर्फ सोचने से ही कितना अन्तर पड़ जाता है तो आप सोचो, सोचने के बजाए जब हम वो रूप बन जाते हैं तो कितनी खुशी की बात! और सदा यही कोशिश करनी है कि जिस समय भी हम बाबा की बातें सुनाते हैं तो उस समय ऐसे लगे जैसे बाबा हमारे में सम्मुख हाज़िर नाज़िर होके अपनी याद दिला रहा है। और बाबा ऐसा मुस्कुराता है जैसे सामने से ही देख रहा है और हमारे भाग्य को उदय कर रहा है।

बाबा कहता है बस, चलते-फिरते कुछ भी करते मुझे याद करो। और याद कितनी मीठी है बाबा कहने से ही मुख मीठा हो जाता है। तो आज भी हम सभी मिलके बाबा की याद में बैठे हैं और बैठ करके जो बाबा के संकल्प है कि इस दुनिया में यह पता पड़े कि हमारा बाबा कौन? और बाबा क्यों आया है, वो हम कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं वो भी बाबा रोज़ देखता है। तो आप सभी भी आज बाबा के आगे बैठे हैं, यह तो भाग्य है जो जब बाबा चांस देता है अपने सामने बैठके सुनने का और हम लोगों को भी कितना अच्छा लगता है, जब बाबा के सामने बैठते हैं और बाबा बोलते हैं तो ऐसे लगता है जैसे एक एक शब्द बाबा का मेरे लिये स्पेशल है और मुझे ऐसा बनना है, दूसरे तरफ बुद्धि नहीं जाती है। अपने तरफ ही जाती है तो कितना मीठा अनुभव होता है। अभी आज भी उसी अनुभव को हम रिपीट कर रहे हैं और दिल में वाह बाबा, वाह बाबा वाह! की स्मृति कितनी प्यारी है, आपके भी अन्दर बाबा आ गया ना। आप भी यही समझते हैं कि बाबा हमारे द्वारा बोल रहा है, तो अभी चलो बाबा के महावाक्य सुनें और सब कुमार या अधरकुमार भाई सब उमंग-उत्साह से बाबा का एक एक बोल सुन क्या रहे हैं लेकिन धारण करके उस पर चलने का दृढ़ संकल्प भी कर रहे हैं।

तो आप सभी भी किसकी याद में बैठे हो? मीठे बाबा, प्यारे बाबा की। ऐसे मीठे बाबा को याद करने से अन्दर का कड़ुवापण आपेही निकल जायेगा। बाबा की हरेक बच्चे प्रति यही शुभ आश है कि यह मेरा एक-एक बच्चा बाप समान बनके निर्विघ्न रहे, रहते भी हैं और रहेंगे भी लेकिन एक एक बच्चा विश्व कल्याण के कार्य में सदा मगन है भी और सदा मगन रहेंगे। तो बाबा आप सबकी शक्लें देख करके प्यार कर रहा है वाह बच्चे वाह! कितना प्यार से सुनते हैं और प्यार से सुनते प्यार को दिल में समाते भी हैं और दिल में समाने से कभी भी देखो तो बाबा का प्यार ही दिखाई देता है, ऐसे है ना।

आजकल की मुरली का सार क्या है? बाबा कहते हैं कि बस, कुछ भी करो मुझे याद जरुर करो क्योंकि पाप कटने के लिये तो बाबा की याद ही चाहिए ना। तो हमारे कितने जन्मों के पाप इकट्ठे हैं और फिर अभी बाबा के याद में सब खत्म हो रहे हैं। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"ज्ञान व पढ़ाई का आधार - त्याग और तपस्या"

हमारी पढ़ाई है त्यागी और तपस्वी बनो। यह त्याग तपस्या ही हमारे इस ज्ञान का आधार है क्योंकि हम योगी हैं, तपस्वी हैं। तो हम योगी और तपस्वियों के बीच जरा अंश-मात्र भी माया नहीं होनी चाहिए। कहते हैं कि तपस्वी जब तपस्या करते हैं तो असुर आ करके विघ्न डालते हैं। यहाँ फिर व्यर्थ संकल्प विकल्प तपस्या में बहुत सामना करते हैं। परन्तु अगर हम एक बाबा की याद में ऐसा लवलीन रहें जो व्यर्थ संकल्प बिल्कुल स्टॉप हो जाएं। व्यर्थ संकल्प जीत बनना ही हमारी तपस्या है, इससे हमारी संकल्प शक्ति बहुत-बहुत पॉवरफुल बनती है। फिर अशरीरी बनना सहज हो जाता है।

तो पहले है त्याग, फिर तपस्या और फिर आती है सेवा। लेकिन सेवा मेरी है या सेवा बेहद बाबा की है? मैं सेवा करती या बाबा जो श्रीमत देता, आज्ञा करता मैं उस अनुसार सेवा करती? ''मैं पन'' आता तो यह हुई हद की सेवा, परन्तु यह बाबा की सेवा है, हम निमित्त हैं तो वह है बेहद की सेवा। इसको कहा जाता है त्यागी, तपस्वी और सेवाधारी। दूसरा - इच्छा का आधार है, कोई-न-कोई सूक्ष्म संस्कार में इच्छा। वास्तव में जब हम हैं ही इच्छा मात्रम् अविद्या, तो किसी भी प्रकार की कभी इच्छा न हो, उमंग भले हो पर इच्छा न हो। जिसको दूसरे शब्दों में बाबा कहते नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। तो हम हर प्रकार से सूक्ष्म नष्टोमोहा हैं? नष्टोमोहा बनने का आधार है - बाबा को सामने देखो। हमें ऐसा बाप समान बनना है। तो हम बाप समान बने हैं? यह हरेक खुद से पूछे क्योंकि अब हमें बाबा का इशारा है - तुम्हें बाप समान सम्पन्न बनना है। तो हमारा पुरुषार्थ भी है, बाप समान सम्पन्न बनना। तो कहा जाता जो बाप समान बनते और बाबा को ही सामने रख चलते, तो ऐसे इच्छा मात्रम् अविद्या वाले की प्रकृति हर तरह दासी होती। तो इच्छा मात्रम् अविद्या का स्लोगन बहुत पुराना हमारे अनुभव में रहता है! सरेण्डर माना नो इच्छा। न कोई बुद्धि में इच्छा है, न कोई व्यवहार कार्य की इच्छा है। सरेण्डर माना जो बाबा खिलावे, जो बाबा पहनावे, जहाँ बाबा रखे, उसमें ही मेरी सफलता है। जैसे इस पर बाबा हमेशा कहते हैं, मालिक बन तुम राय दो और बालक बन स्वीकार करो। तो हम बालक मालिक हैं, इसका पूरा बैलेन्स चाहिए इसलिए मालिक बन राय दिया फिर बालक बन गये। नहीं तो आता कि मेरी तो राय मंजूर नहीं हुई, यह क्या हुआ, आगे तो मैं राय ही नहीं दूँगी, यह है इच्छा अथवा सूक्ष्म अभिमान।

तो आप सबको यह सब प्रैक्टिकल अनुभव होने चाहिए। आप चाहे किसी भी देश के हो, किसी भी भाषा के हों... पर आप इस ज्ञान में नहीं आये हो, आप सबको बाबा ने चोटी से खींचकर लाया है। जिन्हों को भी थोड़ा देह-अभिमान आया, मैं ऐसा हूँ, वैसा हूँ, वह देह-अभिमान वाले ठहर नहीं सकेंगे इसलिए सदा ही थैंक्स बाबा! शुक्रिया बाबा! वाह बाबा! वाह बाबा! का गीत गाओ। चाहे जो भी कुछ सफलता होती, बाबा के पास में हमारा रिकॉर्ड है। अगर आप कहते मैंने इनको ज्ञान दिया, यह देखो कितना अच्छा है। तो बाबा कहते नहीं, तुमने क्या ज्ञान दिया, मैंने उसकी बुद्धि को टच करके तेरे पास भेजा है। तो सुखदाता सबके प्यार का दाता बाबा है।

तो सफलता का आधार है - एक बाबा से सर्व सम्बन्धों का प्यार। बाबा के प्यार में लीन रहो तो बाकी सब समस्या समाप्त। कहा जाता मेरे रग रग, नस नस में हर मिनट घड़ी में, बाबा-बाबा मीठा बाबा...बसता। इसी में रहो तो कभी उदास नहीं होंगे। हाँ, कभी-कभी बाबा पेपर लेता, आप 10 गुणा मेहनत करेंगे, टाइम भी देंगे रिजल्ट एक गुणा मिलेगी, यह पेपर होता है। तो इसको बाबा कहते तुमने सूक्ष्म इच्छा रखके यह सब काम किया। कहा जाता तुम एक कदम आगे आओ तो बाबा 100 कदम आगे आयेगा। नहीं तो बाबा भी क्यों आये। तो इसमें बाबा पेपर भी लेता कि देखें कितना नाउम्मींद हुआ इसलिए यह सब हमारी अवस्था को बढ़ाने के लिये कई प्रकार के पेपर्स आते लेकिन हमें फुल पास होना है। अगर आज एक गुणा सफलता नहीं मिली लेकिन तुम राइट हो तो कल दस गुणा सफलता अवश्य मिलेगी। तो सफलता का आधार है - आप पूरा ही सरेण्डर रहो। बाबा कहता है जितना-जितना तुम मुझे याद करेंगे उतना-उतना तुम्हें सफलता मिलेगी। तो सफलता में निश्चयबुद्धि भी चाहिए। सफलता में त्याग, तपस्या भी चाहिए और इतना ही सूक्ष्म अपनी धारणा चाहिए क्योंकि अब बाबा चाहते हैं कि मेरे बच्चे सभी सम्पन्न बनें। अच्छा - ओम् शान्ति।